तीन वरदान

हारू नाम का एक बेडौल लड़का था । वह नाटे कद का था और उसकी नाक मोटी और छोटी थी । वह सदा ही गंदे और फटे-पुराने कपड़े पहने रहता था क्योंकि वह बहुत गरीब था और विधवा बूढ़ी माँ के अलावा उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था ।

वह अनपढ़ होने के कारण कड़ी मेहनत के उपरान्त भी अपनी आवश्यकतानुसार नहीं कमा पाता था । उसकी माँ फिर भी उस थोड़ी कमाई से अपना काम चला लेती थी, इसलिए हारू खुश था । उसकी छोटी नाक के कारण गाँव के बच्चे उसे चिढ़ाते थे, जिसके कारण वह दुःखी रहता था ।

जैसे-जैसे दिन बीतते गये, हारू जवान हो गया । अपनी माँ की मृत्यु पर हारू अत्यन्त दुःखी हुआ और उसके सिरहाने बैठकर रोता हुआ बोला - "ओ माँ! अब तुम मुझे छोड़कर चली गई हो, अब मेरी देखभाल कौन करेगा! मुझे कौन खिलायेगा ?" पड़ोसी उसे समझाने आये । बड़े-बुजुर्गों ने कानाफूसी की और फिर हारू को समझाने के लिए एक ओर ले गए ।

"देखो हारू, तुम्हारी माँ अब नहीं रही," मुखिया ने कहा, "और अब तुम्हारे घर-बार को देखने वाला कोई नहीं है, इसलिए अब तुम शादी कर लो । तुम्हारी क्या इच्छा है ?"

यद्यपि वह शर्मा गया, पर उसे यह बात अच्छी लगी ।

"साहब," वह हकलाते हुए बोला "मैं आपको सोचकर कल जवाब दूँगा ।"

अपनी स्वर्गवासी माँ का क्रियाकर्म करके वह वापस घर लौटा । वह फिर बाहर ड्योढ़ी पर बैठकर अपने विवाह के बारे में विचार करने लगा ।

दिन भर हारू अपने विवाह के बारे में सोचता रहा । उसने सोचा कि मुझे किसी सुन्दर लड़की से विवाह करना चाहिए, पर दूसरे ही क्षण उसे विचार आया, "क्या यदि वह भी इन शैतान बच्चों की तरह मेरी छोटी नाक पर हँसेगी तो! न बाबा ना! मैं तो सुन्दर लड़की से विवाह नहीं करूँगा ।" वह दुबारा सोचने लगा और काफी समय बाद नतीजे पर पहुँचा ।

दूसरे ही दिन वह मुखिया से मिला और आदरपूर्वक कहा, "मैं शादी के लिए तैयार हूँ। पर उस लड़की की भी छोटी - सी नाक होनी चाहिए !"

वृद्ध आदमी ने पूछा, "पर हारू, तुम ऐसी लड़की पसन्द क्यों कर रहे हो ?"

हारू जमीन में अपनी नजर गड़ाता हुआ बोला, "नहीं तो, साहब, वह मेरी छोटी नाक की हँसी उड़ायेगी ।"

वह बुजुर्ग मुस्कराता हुआ बोला, "खैर हारू, मैं प्रसन्न हूँ कि तुम शादी के लिए तैयार हो गए हो । मैं तुम्हारे लिए तुम्हारी पसन्द की लड़की ढूँढने की चे-टा करूँगा ।"

एक दूर गाँव में छोटी नाक वाली उपयुक्त कन्या ढूँढी गई और हारू उससे शादी करके बड़ा खुश हुआ । पर उसका यह सुख क्षणिक था क्योंकि अब गाँव के बच्चे उन्हें "नकटे पति-पत्नी" कहकर चिढ़ाने लगे ।

हारू ने उन्हें समझाने की भरसक कोशिश की । उसने अपनी बाँह चढ़ाकर गलियों में उनका पीछा किया, उनके माता-पिता से शिकायत भी की, पर कोई फायदा नहीं हुआ । एक रात को वह बैठा-बैठा मन ही मन सोचने लगा,"नहीं! कोई भी मेरी मदद नहीं करेगा, पर मुझे गाँव में अपनी हँसी उड़वाते हुए अच्छा नहीं लगता! हाय! अब मैं क्या करूँ ?" अचानक उसे ख्याल आया - "परमात्मा ने ही तो हमें यह शरीर दिया है, मुझे सहायता के लिए उससे ही प्रार्थना करनी चाहिए । इसके अलावा और कोई उपाय नहीं है ।"

प्रसन्नता से उसने अपनी पत्नी को पुकारा और कहा, "जब तक मैं वापस न आऊँ, तुम घर पर ही रहना," दरवाजा अपने पीछे बंद करता हुआ वह जंगल की ओर चल दिया । घने जंगल में पहुँच कर उसे एक जमीन में गड़ा, काई से ढका बड़ा पत्थर दिखा । उस पर बैठकर वह ईश्वर को सहायता के लिए पुकारने लगा । सारा दिन बीत गया, वह ध्यानमग्न होकर बिना हिल-डुले और किसी चीज की परवाह किये बिना लगातार प्रार्थना करता रहा ।

ईश्वर उसकी लगन से प्रसन्न हुए और उसके सामने प्रकट हुए । देवता को अपने सामने देखकर हारू का मन बाग-बाग हो उठा । बड़ी विनम्रता से उसने देवता को सा-टांग प्रणाम किया और फिर घुटनों के बल बैठकर हाथ जोड़कर करबद्ध निवेदन किया, "प्रभो! प्रभो! मुझ पर कृपा कर मेरी प्रार्थना स्वीकार करो ।" करूणानिधान प्रभु ने मुस्कराते हुए उसे तीन बार गोटी फेंककर तीन वरदान माँगने को कहा ।

हारू यह शुभ-संवाद अपनी पत्नी को सुनाने दौड़ा, "सुनती हो!" वह चिल्लाया और जोर से दरवाजा खटखटाते हुए बोला "जल्दी खोलो ।"

पत्नी ने जैसे ही दरवाजा खोला वह सीधा अपने पलंग पर जाकर राजा की तरह ठाठ से बैठ गया । उसकी पत्नी को बड़ा आश्चर्य हुआ और वह इस व्यवहार को समझ नहीं पाई।

"जाओ और मेरे लिए एक गिलास पानी ले आओ" - हारू ने हुक्म दिया, पर उसकी पत्नी ज्यों-की-त्यों द्वार पर खड़ी-खड़ी उसे घूरती रही ।

"क्या बात है ?" हारू गुस्से से चिल्लाया, "जल्दी करो और मुझे पानी दो!"

"हे मेरे प्यारे! यह तुम्हें क्या हो गया है ? तुम्हें किसने पागल कर दिया ?" अपने हाथों से सर पीटती रोती हुई बोली ।

"बस! बस! बंद करो," हारू चिल्लाया । फिर अचानक अपनी आवाज धीमी कर, फुसफुसाते हुए बोला, "प्रिये मेरी बात सुनो! मैं बड़ा भाग्यवान् हूँ...." और उसने अपनी सारी राम-कहानी उसे सुना दी ।

उसकी पत्नी प्रसन्नता से नाचने लगी । फिर उसके पास आकर बैठती हुई खुशामद करने लगी, "सुनो जी! पहली गोटी धन-दौलत के लिए फेंको ।"

"ना ना!" हारू ने विरोध किया, "हमें धन से क्या प्रयोजन ? हाँ मैं तो कहता हूँ कि हमें नाकों की सबसे अधिक आवश्यकता है । हमारी कुरूप नाकों पर लोग हँसते हैं । हम पहले सुन्दर, सुडौल नाकों के लिए ही गोटी फेंकें ।"

पर पत्नी का मन पहले धन दौलत पाने का था । उसने रोकते हुए उसका हाथ पकड़ा। इस पर हारू को बड़ा गुस्सा आया, और जबरदस्ती अपने हाथों को खींचकर एकाएक गोटी फेंकते हुए बोला, "हम दोनों को सुन्दर नाक दो और कुछ नहीं, केवल नाक ही नाक।"

तुरंत ही उन दोनों के सारे शरीर पर नाक ही नाक उग गए । "हे प्रभु! दया करो" अपनी पत्नी की ओर देखते हुए हारू चिल्लाया, "अरे! तुम तो बहुत ही भद्दी लगती हो।" "तुम भी तो!" उत्तर में वह भी चिल्लाती हुई बोली । वे एक-दूसरे के इस भयानक रूप को देख कर बड़े चकित हुए। उन्हें बेशक सुन्दर-सुन्दर अनगिनत नाक प्राप्त हो गई पर वे इतनी क-टदायक थी कि उन दोनों ने दूसरी बार गोटी फेंककर उन नाकों को हटवाने का निश्चय किया।

वैसा ही हुआ, पर हाय! उनकी जो दो छोटी-छोटी नाक थी, वह भी गायब हो गयी। दोनों पति-पत्नी एक-दूसरे की ओर विस्मित हो देखने लगे । वे पहले से और अधिक भद्दे लगने लगे ।

"हे प्रिये!" हारू गिड़गिड़ाते हुए बोला, "यह मैंने क्या किया । मुझे तुम्हारी बात मान लेनी चाहिए थी । अब बोलो, अपने लिए दो सुन्दर नाकों की माँग करें ?"

पत्नी अपने नाकहीन मुँह को हाथों में छिपाते हुए बोली, "प्राणनाथ, यदि हमें सुन्दर नाक मिल जायेगी, तो लोग अवश्य इस परिवर्तन का कारण पूछेंगे और जब उन्हें असलियत का पता चलेगा तो हमारी मूर्खता का प्रदर्शन होगा कि तीन वरदान पाकर भी हम अपनी हालत नहीं सुधार सके । और तो और, यदि हम अमीर भी हो जायें तो बिना नाक के जी नहीं सकते । तो चलो वापस हम अपनी छोटी-सी नाक ही ठीक जगह पर लगा लें । और अब की बार बड़ी सावधानी बरतियेगा, यह हमारा आखिरी मौका है।"

अपनी गलती का आभास कर हारू अपनी बदनसीबी पर रोया, "हाय! मैंने ऐसा सुन्दर मौका खो दिया । हाय! मैं भी कैसा मूर्ख हूँ ।" पर अब बहुत देर हो चुकी थी । अंत में उसने घुटने टेककर गोटी फेंकी और प्रार्थना की, "हे भगवन्! हमें हमारी छोटी-सी नाक वापस दे दो।"

शिक्षाः अपने जीवन में आये हुए हर मौके का सोच-समझ कर ठीक-ठीक लाभ उठाओ ।

संग्रहकर्ताः-
पंकज कुमार
ए ए आर,एस टी डी ग्रुप
[illegible] निदेशालय